शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में बालिकाओं के कौशल एवं शिक्षण का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का तुलनात्मक अध्ययन।

Jayoti Vidyapeeth Women's University

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

शिक्षा शास्त्र पी.एच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध–निर्देशिका:
डॉ. मन्जू शर्मा
प्रोफेसर

शोधार्थी
रेखा चौपड़ा

फैकल्टी ऑफ एज्यूकेशन मैथोडोलॉली

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान), भारत

शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में बालिकाओं के कौशल एवं शिक्षण का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का तुलनात्मक अध्ययन।

1. शोध का परिचय :–

शिक्षक प्रशिक्षण में बालिकाए अपने दैनिक जीवन की परिस्थितियों से बहुत कुछ सीखती हैं। नई वस्तुएं और घटनाएं उन्हें सर्वाधिक आकर्षित करती हैं। इस कारण अपने परिवेश को देखकर उनमें बहुत सारी जिज्ञासाएं उत्पन्न होती हैं। इस परिप्रेक्ष्य में वह घर, विद्यालय, परिवार एवं आस–पड़ोस के अनेक उत्पादक कार्यों में शामिल होता है जिससे न केवल उनकी जिज्ञासा शांत होती है वरन् परस्पर सहयोग और दूसरों की सहायता करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ही राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1986 में कार्य अनुभव को कार्य शिक्षा के रूप में देखा गया है। इस प्रकार कार्य शिक्षा का अभिन्न अंग है। यह बालिकाओं में ज्ञान तथा कौशल दोनों के विकास पर केन्द्रित है। यह उन्हें कार्य के संसार में प्रवेश हेतु तैयार करती है। कार्य शिक्षा बालिकाओं को सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियों (कक्षा के भीतर तथा बाहर) में भाग लेने के

अवसर प्रदान करती है। यह विभिन्न कार्यों के वैज्ञानिक सिद्धांतों तथा विधियों की समझ बनाने में सहायक है।

पिछले 70 वर्षों में, मुख्यतः पिछले 30 वर्षों में कार्य शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण में बालिकाओं की शिक्षा एवं कौशल के प्रत्येक स्तर पर एक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक भाग के रूप में प्रस्तुत किए जाने पर बल दिया गया है। यह सभी प्रकार के हस्त कार्यों के प्रति सम्मान और गरिमा के दृष्टिकोण का निर्माण करती है। यह हस्तकार्यों तथा प्रतिष्ठापूर्ण कार्यों में संलग्न व्यक्तियों के भेद को दूर करती है। अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने में बालिकाओं को सक्षम बनाती है। यह समाज के लिए उपयुक्त कार्य कौशलों का विकास करती है। कार्य शिक्षा, काम के प्रति उचित व्यवहार, काम के अनुकूल आदतों तथा मूल्यों का विकास करती है। यह व्यक्ति को काम से संबंधित आवश्यक ज्ञान प्रदान कर उत्पाद कार्य द्वारा आर्थिक विकास में मदद करती हैं। इस प्रकार यह बालिकाओं को सामाजिक कार्यों से जोड़कर सामाजिक गुणों का विकास करती है। कार्य शिक्षा विद्यार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायक है। इसलिए यह समस्त योजनाओं, रिपोर्टों तथा दस्तावेजों का आवश्यक अंग रही है। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा, कोठारी कमीशन रिपोर्ट, एन.सी.ई.आरटी. की दस वर्षीय

पाठ्यचर्या की रूपरेखा, ईश्वर भाई पटेल समिति की रिपोर्ट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 में बालिकाओं के कौशल एवं शिक्षण में इसे शिक्षा का आवश्यक अंग माना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की सिफारिशों में स्पष्ट किया गया है कि विभिन्न अवस्थाओं में पोषित एवं विकसित की जाने वाली दक्षताओं तथा मूल्यों की पहचान की जाए, किन्तु शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा उन परीक्षाओं द्वारा और अधिक परिचालित होती चली गई जो महज़ जानकारी से भरी पाठ्यपुस्तकों पर आधारित होती हैं। वर्ष 2020 में पाठ्यचर्या की रूपरेखा की समीक्षा के बाद भी पाठ्यचर्या और परीक्षाओं के विवादास्प्द मुद्दे हल नहीं हुए। वर्तमान पाठ्यचर्चा की समीक्षा इस क्षेत्र में हुए सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तनों पर ध्यान देती है और नयी सदी के मोड़ पर स्कूली शिक्षा की भावी आवश्यकताओं को संबोधित करने का प्रयास करती है। इस प्रयास में अनेक, परस्पर संबंधित आयामों को ध्यान में रखा गया है; जैसे–शिक्षा के लक्ष्य, बच्चों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति, मानव विकास की प्रकृति और बच्चों के सीखने की प्रक्रिया।

‘राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा’ को प्रायः गलत समझा गया है मानो यह एकरूपता लाने के लिए प्रस्तावित दस्तावेज़ हो जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और प्रोग्राम ऑफ एक्शन (1992), में स्पष्ट किया गया उद्देश्य इसके ठीक विपरीत था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने नवीन पाठ्यचर्या की रूपरेखा प्रस्तावित की ताकि वह ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था के विकास का ज़रिया बने जिसमें यह सामर्थ्य हो कि वह भारत के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को दृष्टि में रखते हुए अकादमिक घटकों के साथ सामान्य आधारभूत मूल्य भी सुनिश्चित करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–प्रोग्राम ऑफ एक्शन ने 14 वर्ष की आयु तक सभी बलिकाओं का सार्वभौमिक नामांकन तथा सार्वभौमिक रूप से उन्हें स्कूलों में टिकाए रखने और शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा की सार्वभौमिक गुणवत्ता में ठोस सुधार के लिए बाल केंद्रित उपागम का विचार प्रस्तुत किया था’’। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की महत्व के रूप में प्रासंगिकता, लचीलापन तथा गुणवत्ता पर बल देते हुए प्रोग्राम ऑफ एक्शन राष्ट्रीय शिक्षा नीति की इसी दृष्टि को विस्तारित किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में उल्लेखित है कि राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था पूरे देश के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के ढाँचे पर आधारित होगी जिसमें एक ‘‘सामान्य केंद्र’’ (कॉमन–कोर) होगा और अन्य हिस्सों की बाबत लचीलापन रहेगा, जिन्हें स्थानीय पर्यावरण तथा परिवेश के अनुसार ढाला जा सकेगा।

‘‘सामान्य केंद्र’’ में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियों तथा राष्ट्रीय अस्मिता से संबंधित अनिवार्य तत्व शामिल होंगे। ये मुद्दे किसी एक विषय का हिस्सा न होकर लगभग सभी विषयों में पिरोए जाएँगे। इनके द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों को हर व्यक्ति की सोच और ज़िंदगी का हिस्सा बनाने की कोशिश की जाएगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में ये बातें शामिल हैं हमारी समान सांस्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, स्त्री–पुरूषों के बीच समानता, पर्यावरणका संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों के अनुरूप ही आयोजित हों। भारत ने विभिन्न देशों में शांति और आपसी भाईचारे के लिए सदा प्रयत्न किया है, और ‘‘वसुधैव कुटुंबकम’’ के आदर्शो को सँजोया है। इस पंरपरा के अनुसार शिक्षा–व्यवस्था का प्रयास यह होगा कि नयी पीढ़ी में विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ हो तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना बढ़े। शिक्षा के इस पहलू की उपेक्षा नहीं की जा सकती। समानता के उद्देश्य को साकार बनाने के लिए सभी को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करवाना ही पर्याप्त नहीं होगा, ऐसी व्यवस्था होना भी ज़रूरी है जिससे सभी को शिक्षा में सफलता प्राप्त करने के समान अवसर मिलें। इसके अतिरिक्त, समानता की मूलभूत अनुभूति केंद्रिक

पाठ्यचर्या के द्वारा करवाई जाएगी। वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य है कि सामाजिक माहौल और जन्म के संयोग से उत्पन्न पूर्वाग्रह और कुंठाएँ दूर हों और सभी में आपसी भाई चारा हो।

इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के रूपरेखा की परिकल्पना शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में बालिकाओं के कौशल एवं शिक्षण की शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक बनाने के रूप में की गई।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता :–

शिक्षा मनुष्य को अज्ञान, तथा दुख के बंधनों से मुक्त करती है और उसे अहिंसक एवं शोषण–विहीन सामाजिक व्यवस्था की ओर ले जाती है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यर्चा के उद्देश्य हैं कि वे बालिकाओं को ज्ञान अर्जित करने, समझ विकसित करने, कौशलों को विकसित करने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के योग्य बनाए। युवावर्ग इस देश की अत्यंत मूल्यवान निधि हैं, इसलिए शिक्षा के माध्यम से क्षमताऍं बढ़ाने के लिए उनका सबलीकरण आवश्यक है। इसलिए प्रतिमानों को बदलना आवश्यक है ताकि पाठ्यचर्या में प्रक्रिया और विषयवस्तु की अंतर्क्रिया को महत्व दिया जा सके। इसके अतिरिक्त छात्रों के अंतरस्थ मूल्यों और संवेगात्मक बुद्धि का विकास भी एक महत्वपूर्ण पहलू है।

इस शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यचर्चा–2020 से बालिकाओं में निम्नांकित बिन्दुओं के विकास और उत्कर्ष में सहायता मिलनी चाहिए:

- भाषा की योग्यताएँ, जैसे–सुनना, बोलना, पढ़ना, और सोचना तथा मौखिक और दृश्य संप्रेषण–कौशल जो सामाजिक जीवन और दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों में प्रभावी भागीदारी के लिए आवश्यक है,

- गणितीय योग्यताएँ जो तार्किक बुद्धि का विकास करे और बालिकाओं को गणितीय क्रियाओं को दैनिक जीवन में लागू करने में सहायता करे,

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास जिसमें खोज या अनुसंधान–भावना, समस्या–हल, प्रश्न करने का साहस और वस्तुनिष्ठता जैसे गुण विद्यमान हों जो भ्रम, अंधविश्वास और भाग्यवाद को समाप्त करने की दिशा में प्रवृत्त करे, इसके साथ ही साथ भारतीय परंपरा में रचे–बसे स्वदेशी ज्ञान को संपुष्ट करते हुए बनाए रखे,

- पर्यावरण के प्राकृतिक और सामाजिक दोनों पक्षों, उनकी अंतर्क्रियात्मक प्रक्रियाओं और उनसे संबद्ध समस्याओं की

समझ विकसित करे और ऐसे तरीके और साधन बताए कि पर्यावरण का संरक्षण किया जा सके,

- देश के विभिन्न भागों के भूखंडों तथा वहाँ के जनजीवन की विविधता और भारत की सामाजिक संस्कृति के प्रति समझ पैदा करे,
- देश के स्वतंत्रता–संग्राम और सामाजिक पुनरूत्थान में सभी वर्गों और क्षेत्रों के स्वतंत्रता सेनानियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और ग्रामीण, आदिवासी और समाज के कमजोर तबकों, के लोगों के बलिदान एवं योगदान के प्रति सराहना की भावना पैदा करे और उनके आदर्शों के अनुसरण की प्रेरणा प्रदान करें,
- परिवर्तनमूलक प्रौद्योगिकी और देश की परंपरा और विरासत की निरंतरता के बीच संतुलित समन्वय की सही समझ उत्पन्न करे,
- राष्ट्रीय प्रतीकों का ज्ञान और उनके प्रति सम्मान पैदा करे तथा राष्ट्रीय अस्मिता एवं एकता जैसे आदर्शों के प्रति आकांक्षा और संकल्प प्रकट करने के लिए प्रेरित करे,

3. शिक्षा की परिभाषाऐं :–

शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्तर्निहित व जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है और सामाजिक वातावरण के साथ सामायोजन स्थापति करने योग्य बनाती है।

प्लेटो के अनुसार :–

शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर एवं आत्मा को पूर्णता प्रदान करना है जिसके योग्य वह है।

कौटिल्य के अनुसार :–

शिक्षा मानव को एक सुयोग्य नागरिक बनाना सिखाती है तथा उसका व्यक्तिगत विकास करती है।

अरस्तु के अनुसार :–

शिक्षा व्यक्ति की शक्ति का और विशेष रूप से मानसिक शक्ति का विकास करती है जिससे वह परम सत्य शिव और सुन्दर के चिंतन का आन्नद उठा सके।

महात्मा गांधी जी के अनुसार :–

शिक्षा मे मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो बालक और मनुष्य के शरीर, आत्मा और मन का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार :–

शिक्षाः मनुष्य की अन्तर्निहितद पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

4. शोध समस्या :–

जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में बालिकाओं के कौशल विकास में आने वाली समस्याओं का निकारकण करने हेतु सार्थक प्रसास करना, एवं शिक्षण का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का तुलनात्मक अध्ययन का विवेचन करना।

5. तकनीकी शब्दावली :–

कौशल :– शब्द की निपुणता व्यक्ति को आसानी से, जल्दी और कुशलता से करने की क्षमता को संदर्भित करती है। अपने व्युत्पत्ति मूल में, निपुणता लैटिन डिक्टर से आती है, जिसका अर्थ है, 'राइट–हैंड' और प्रत्यय–ईज़ा, जिसका अर्थ है 'गुणवत्ता'।

कौशल में गुणवत्ता से समझौता किए बिना चुस्त और कौशल उत्पादन शामिल है। यह इस प्रकार है कि कौशल तत्वों की एक श्रृंखला से बना हैं।

शिक्षण :– भाषा शिक्षण में लक्ष्य भाषा (जिस भाषा का शिक्षण हो रहा है) के शब्दों ज्ञान कराना अतिआवश्यक होता हैं। अन्य भाषा के रूप में हिन्दी शब्दावली का ज्ञान शिक्षार्थियों को कराया है। चूँकि भाषा शिक्षण एक सीतित समय में की जाने वाली प्रक्रिया है, इसलिए हिन्दी के सभी शब्दों के सभी शब्दों को सिखा पाना या याद करा पाना संभव नहीं है। इसलिए कुछ अतिआवश्यक या महत्वपूर्ण शब्दों का चयन करके उनका शिक्षण किया जाता हैं।

प्रशिक्षण :–

प्रशिक्षण का अर्थ एक व्यक्ति को एक निश्चित पद के अनुकूल बनाना है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ नियुक्त अधिकारियों और कर्मचारियों को दिए गए कार्यो की प्रकृति, कला एवं विधि के बारे में व्यावारिक ज्ञान प्रदान करना है।

6. शोध विधि :–

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुसंधान में कई प्रकार की अध्ययन विधियां प्रचलित हैं जिनका प्रयोग शोधकर्मी ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि आधुनिक समाज में विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार का व्यवस्थित प्रयास है जिसमें सामाजिक संस्थाओं के स्तर का समूह अथवा क्षेत्रों के संबंध में विवेचना व्याख्या आदि से संबंधित बातों का उल्लेख किया जाता है।

7. न्यादर्श :–

अनुसंधान परिणामों की विश्वसनीयता अनुंसधान के न्यादर्श पर निर्भर करता है। न्यादर्श प्रत्येक अनुसंधान कार्य की अधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी, अनुसंधान के परिणाम भी उतने की विश्वसनीय एवं सुदृढ़ होंगे।

"एक न्यादर्श विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि होता है।"

–"गुड एवं हॉट"

“एक न्यादर्श अपने समस्त समूह का एक लघुचित्र है।”

—“पी.वी. यंग”

“एक न्यादर्श समग्र का वह अंश है, जिसका चयन अनुसंधान के उद्देश्य के लिए किया जाता है।”

—“सिम्प्सन एवं काप्का”

8. शोध के चर :—

शोधकर्ता अपनी समस्या से संबंधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकिक मूल्य रखने वाले गुणों, विशेषण या योग्यता का मापन करता है, यह गुण विशेषता योग्यता ही चर कहलाता है।

चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य हैं।

—“कर लिंगर”

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है :–

1. **स्वतंत्र चर :–** स्वतंत्र चर वह चर है जिसकी उपस्थिति अथवा उसमें होने वाला परिवर्तन किसी अन्य चर को प्रभावित करता है। अध्ययन आदतें व मूल्य प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर हैं।
2. **आश्रित चर :–** आश्रित चर वह चर है जिरो स्वतंत्र चर के प्रत्युत्तर में ग्रहण किया और मापा जाता है। आश्रित चर का मान स्वतंत्र चर के मान पर निर्भर करता है।

प्रस्तुत शोध में :– शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में बालिकाओं के आश्रित चर हैं।

9. शोध के उद्देश्य :–

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्देश्य का निर्धारण करता है, उद्देश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते हैं तथा परिश्रम व धन व्यय हो जाता है अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्देश्य का निर्धारण किया है:

1. जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की बालिकाओं के कौशल का अध्ययन करना।
2. जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की बालिकाओं के शिक्षण का अध्ययन करना।
3. जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की बालिकाओं के कौशल एवं शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की बालिकाओं क कौशल एवं शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

10.परिकल्पना :–

प्रेषित तथ्यों की व्याख्या करने के लिए या घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए परिकल्पनाओं के बिना न ही कोई प्रयोग संभव हो सकता है और न की वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही संभव हैं। वास्तव में परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन प्रक्रिया है।

परिभाषाऐं :– ''परिकल्पना परीक्षण के लिए प्रस्तुत की गई एक प्रस्थापना है।''

परिकल्पना एक ऐसी प्रस्थापना है जिसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी परीक्षा की जाती है।

शोध कार्य की परिकल्पनाऐं :–

- जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की बालिकाओं की कौशल एवं शिक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की बालिकाओं के कौशल में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर जिले के शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों की बालिकाओं के कौशल व शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
- जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बालिकाओं की कौशल एवं शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

11.अध्ययन में अपनायी जाने वाली विधि :–

विधि :–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि अपनायी जायेगी। शोध अध्ययन के लिए आंकड़े एकत्रित करने हेतु बालिकाओं के परीक्षण हेतु सर्वे किया

जायेगा। परीक्षणों में प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से विश्लेषण करके अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

12. शोध का परिसीमनः

- प्रस्तुत शोध कार्य को जिला जयपुर (राजस्थान) के शिक्षक स्तर के 50 शहरी व 50 ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक सीमित रखा जायेगा।
- शोध कार्य में 100 बालिकाओं का चयन किया जायेगा।

13.अध्ययन में अपनायी जाने वाली विधि :–

- प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि अपनयी जायेगी।
- शोध अध्ययन के लिए आंकड़े एकत्रित करने हेतु छात्र परीक्षण हेतु सर्वे किया जायेगा।
- परीक्षणों में प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से बालिकाओं के कौशल एवं शिक्षण का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं 2020 का तुलनात्मक अध्ययन किया आयेगा।

14. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

- व्यक्तिगत आंकड़े प्रपत्रः इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत जानकारी ली जायेगी।

- आर.के. ओझा एवं एम. भार्गव का मूल्य परीक्षण : इसमें शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में बालिकाओं के कौशल के मूल्य का अध्ययन किया आयेगा।

15. आंकड़ो का विश्लेषण :–

- आंकड़ों के विश्लेषण में सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग निम्ना अनुसार किया जायेगा :–

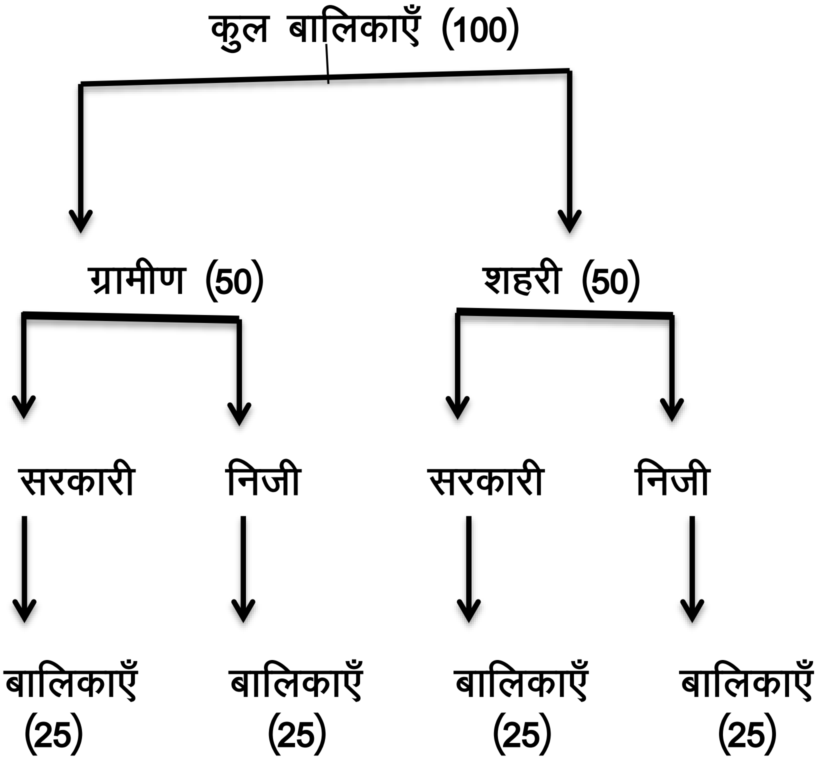

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliorgraphy)</u>

- अग्रवाल संध्या; **''शिक्षा मनोविज्ञा''**, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, 2005
- भार्गव महेश; **''मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'',** हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा, 1997,
- भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षी; **''भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास'',** आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2006
- भटनागर सुरेश; **''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'',** इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2005
- मुखर्जी एस0एन0; ''**एजूकेशन इन इण्डिया : टूडे एण्ड टुमारो"** आचार्य पब्लिकेशन्स बड़ोदरा, 1993
- नरेश प्रसाद; **''भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अध्यापकों की स्थिति और व्यवसायिक प्रतिबद्ध''** जैन प्रकाशन बुक डिपो आगरा, 2007
- शर्मा आर0ए0; **''शिक्षा अनुसंधान''** आर0लाल बुक डिपो मेरठ, 2005
- भटनागर, आर0पी0; **''शिक्षा अनुसंधान'',** इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2003

- वर्मा जे0एच0; **''द कम्पैरेटिव स्टडी आफ रॉल कॉनफ्लिक्ट ऑफ मेल एण्ड फीमेल एजूकेशन एडमिनिस्ट्रेशन इन रिलेशन टू देयर पर्सनैलिटी ट्रेन्ड्स एण्ड एडजेस्टमैन्ट''** पी0एच0डी0 इन एजूकेशन, चौ0 चरण सिंह यूनिवर्सिटी, 1990
- बुच एम0बी0; **''फौर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन''** प्रथम एवं द्वितीय खण्ड एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली, 1991
- **चैलेन्ज ऑफ एजूकेशनए पॉलिसी परस्पेक्टिव,** डक्यूमेंट, गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया, 1987
- शर्मा, सीताराम; **''ए हैण्ड बुक ऑफ स्कीम फॉर टैक्निकल एण्ड मैनेजमेंट एजूकेशन''** मंगलदीप पब्लिकेशन, खेड़ी हाउस, जयपुर, राजस्थान, 1998
- अग्रवाल, जे0सी0; **''नेशनल एजूकेशन पॉलिसी'',** ए फ्रेम वर्क, जयपुर, 1989
- मंगल अंशु बरौलिया, ए. अग्रवाल; **''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी'',** राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा, 2007
- मेकेगुइन, एफ.जे.; **''एक्सपेरीमेंट्स साइकोलोजी''** प्रेक्टिस हॉल ऑफ प्रा.लि., 1997

- दत्ता संजय; **''शिक्षा–मनोविज्ञान में अधिगम एवं व्यक्तित्व'',** जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर संस्करण–2005
- सैनी प्रीति; **''नई शिक्षा'',** अप्रैल–मई, 2006
- गुप्ता, एस.पी.एवं गुप्ता, अलका **''भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास''** शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 11, यूनिवर्सिटी रोड, 2005
- रा.शै.अ.प्र.प.(1986). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–1986, नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरबिन्दो मार्ग।
- रा.शै.अ.प्र.प.(2020). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2020, नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरबिन्दो मार्ग।